हरित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान , जोधपुर में ''अकाष्ठ वनोपज़ उत्पादों का मूल्य-संवर्धन और मार्केटिंग (वानस्पतिक उद्भव) : अकाष्ठ वनोपज़ / औषधीय पौधे'' विषय पर दिनांक 23.7.18 से 08.08.18 तक हरित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया , जिसमें 20 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया । प्रतिभागियों को राजस्थान के महत्वपूर्ण अकाष्ठ वनोपज उत्पादों एवं औषधीय पौधों की खेती , प्रसंस्करण, मूल्य-संवर्धन एवं उत्पादन से आयातकों तक वितरण के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को तीन हिस्सों में बांटा गया।

प्रथम खंड - महत्वपूर्ण अकाष्ठ वनोपज उत्पादों, राजस्थान के औषधीय पौधों का परिचय, उनकी खेती, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और वनों से इनकी सतत कटाई के बारे में व्याख्यान।

द्वितीय खंड - उद्योगों का भ्रमण / स्वयं सेवी दलों/ अकाष्ठ वनोपज उत्पादों और औषधीय पौधों के प्रसंस्करण और मूल्य-संवर्धन से जुड़ी ग्राम वन सुरक्षा समितियों का भ्रमण (70%)।

खंड तृतीय - नीम की पत्तियों से कम्पोस्ट बनाने वाले किसानों के यहाँ भ्रमण और उनसे विचार-विमर्श।

खंड चार - प्रतिभागियों का चार्ट बनाकर मूल्यांकन, पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण एवं उद्योगों/स्वयं सहायता समूहों/ वन सुरक्षा प्रबंध समितियों में व्यावहारिक प्रदर्शन (प्रशिक्षण कार्यक्रम में चार बार)।

विस्तृत कार्यक्रम

प्रथम खंड - महत्वपूर्ण अकाष्ठ वनोपज उत्पादों, राजस्थान के औषधीय पौधों का परिचय, उनकी खेती, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और वनों से इनकी सतत कटाई के बारे में व्याख्यान - केर के फलों, खेजड़ी की फलियों , कुमठ के बीज और गम (गोंद) निकालने की विधि , सोनामुखी ,

एलोवेरा, इसबग़ोल और मेहंदी आदि की खेती , भंडारण और प्रसंस्करण की विभिन्न विधियाँ , आर्थिकी और ग्रामीण आजीविका में इनकी भूमिका आदि की बारे में विषय-विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिये गए । स्वयं सहायता समूहों के गठन और उनकी कार्य-विधि से संबन्धित भी व्याख्यान दिया गया ।

खंड 2 इस खंड में प्रतिभागियों को राजस्थान के जोधपुर, पाली और सोजत जिलों में इसबग़ोल, ग्वार गम और मेहंदी प्रसंस्करण , उनकी उपभोक्ताओं और आयात के लिए ग्रेडिंग और पेकिंग करने वाले उद्योगों और सोजत में मेहंदी के खेतों का भ्रमण किया।

प्रतिभागियों को कृषि उत्पाद सहकारी समिति, जोधपुर एवं सोजत (APMC) की कार्य-प्रणाली से भी परिचित करवाया गया और साथ ही कृषि मंडी प्राधिकरणों और व्यापारियों से विभिन्न महत्वपूर्ण अकाष्ठ वनोत्पादों और औषधीय पौधों जैसे सोनामुखी , मेहंदी, इसबग़ोल और अरंडी आदि का किसानों के खेत से मंडी तक आयात , भंडारण, प्रसंस्करण, मिडल-मैन के कमीशन , और मूल्य तय करने हेतु कच्चे पदार्थों की ग्रेडिंग से जुड़े पहलुओं पर वार्ता भी की। उन्हें नीम की पत्तियों के संग्रहण, प्रसंस्करण, छाल निकालने एवं बेलिंग से भी परिचित कराया गया।

प्रतिभागियों ने राजस्थान के उदयपुर जिले की वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति का भी भ्रमण कर अगरबत्ती और गुलाल बनाने का काम देखा और सीखा।

प्रतिभागियों ने लुंडावास (पाली जिले में सोजत शहर) में गायत्री परिवार स्वयं सहायता समूह) का भ्रमण कर झाड़ू बनाने की विधि का प्रशिक्षण प्राप्त किया । साथ ही प्रशिक्षणार्थियों को अरडु बनाने हेतु कच्चे पदार्थों की प्राप्ति के तरीके और मशीन के बारे में जानकारी प्रदान की गयी ।

प्रतिभागियों ने सिरोही जिले स्थित यूएपी विर्गो फार्मा , आबू रोड का भी भ्रमण किया जहां उन्हें आयुर्वेदिक पौधों से दवाई बनाने के लिए कच्चे पदार्थों की जाँच हेतु विभिन्न मानकों एवं इनके प्रसंस्करण और पेकिंग के बारे में भी प्रशिक्षण प्रदान किया ।

प्रतिभागियों ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर की मॉडल नर्सरी में स्थित औषधीय पादप जर्म-प्लाज्म का भी भ्रमण किया।

खंड 3- इस खंड में प्रतिभागियों ने पाली जिले के सोनाई मांझी गाँव का भ्रमण किया और किसानों से नीम की पत्तियों से कम्पोस्ट बनाने के बारे में चर्चा की।

खंड 4 - हरित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के निर्देशानुसार प्रतिभागियों का चार्ट बनाकर मूल्यांकन, पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण एवं उद्योगों/स्वयं सहायता समूहों/ वन सुरक्षा प्रबंध समितियों में प्रायोगिक प्रशिक्षण द्वारा मूल्यांकान किया गया। दिनांक 25.7.18 से 8.8.18 तक (चार बार) प्रतिभागियों ने चार्ट निर्माण द्वारा तीन प्रस्तुतीकरण और एक पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण दिये । पावर पॉइंट प्रस्तुतिकरणों के विषय निम्न थे -

- **खेजड़ी : मरुधरा का एक महत्वपूर्ण पादप**
- **चन्दन एक बहुपयोगी पादप**
- **सीसस क्वाड्रेंगुलेरिस (वाइटेसी) : हडजोड़ : महत्वपूर्ण औषधीय पादप**
- **अपामार्ग : महत्वपूर्ण औषधीय पादप और दैनिक जीवन में इसका उपयोग**
- **मधुका लोंगीफोलिया (महुआ) की आदिवासी आजीविका में भूमिका**

प्रतिभागियों को वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति घाटा नाड़ी , रेंज रेवला का भ्रमण करवाया गया तथा उन्हें हर्बल गुलाल व अगरबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।
हरित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रतिभागियों की सोच में परिवर्तन किया है ।
अधिकतर प्रतिभागियों ने अपने स्वयं के खेतों में नीम की पत्तियों से कम्पोस्ट बनाने के बारे में

उत्साह दिखाया है। यह गतिविधि दिसंबर से शुरू होगी और फरवरी के अंत तक चलेगी । इससे रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में कमी आएगी और बेहतर कृषि उत्पाद बनाने की ओर रुझान होगा।

डॉ. संतोष कुमार छापर को मास्टर ट्रेनर चयनित किया गया । वो जोधपुर के पास स्थित एक खनन क्षेत्र में केक्टस (औषधीय पौधा) का बाग लगाने की योजना बना रहे हैं ।

दो प्रतिभागी, श्री मोहित लोहानी एवं श्री अविनाश गर्ग विशेषज्ञ चयनित किए गए । इन दोनों ने सब्जी तथा फल उगाने हेतु मृदा रहित माध्यम (कोकोपीट) का उपयोग किया एवं इन्हें अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बेलिंग

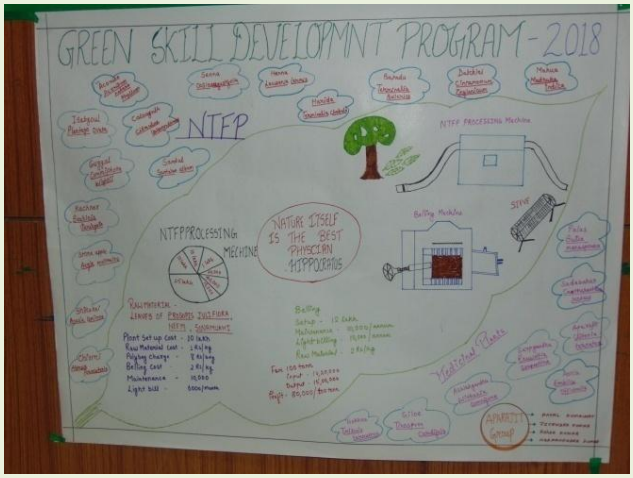

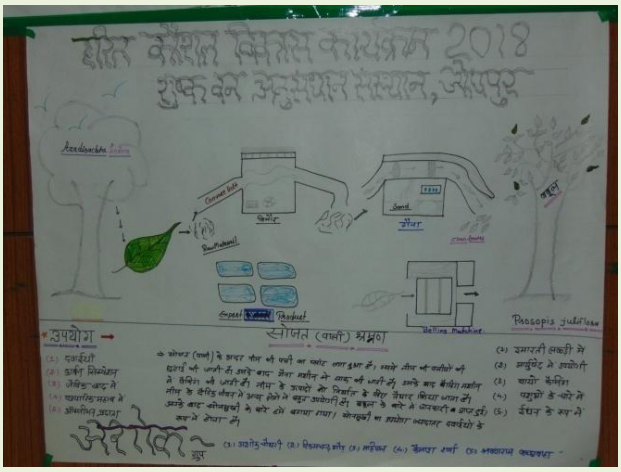

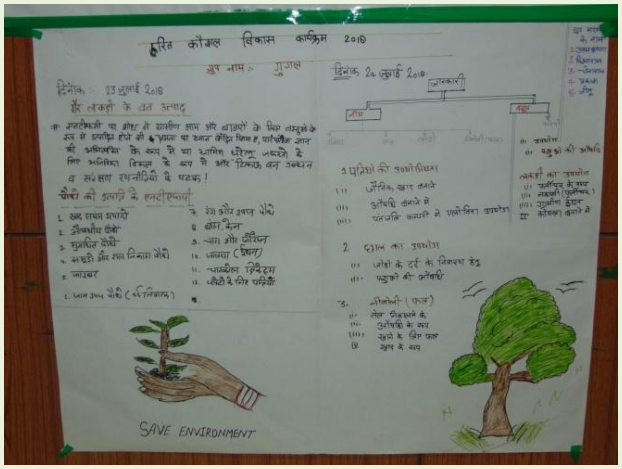

प्रशिक्षणार्थियों के विभिन्न समूहों द्वारा चार्ट निर्माण

महत्वपूर्ण व्याख्यान एवं फील्ड विजिट

प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रस्तुतीकरण

संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण